अशोक आनन

एक और बूढ़ा सूरज

सिंदूरी साँझ से गले लगकर –
एक और बूढ़ा सूरज ढल गया ।

सुबह से शाम –
चमका जो सोने – सा ।
घाम दिन भर –
फुदका मृग – छौने – सा ।

बाँध – बाँधकर बोरिया – बिस्तर –
एक और बूढ़ा सूरज ढल गया ।

बादलों ने –
कभी उसे दबोचा ।
कोहरे ने –
कभी उसे खरोंचा ।

रात को अपनी सत्ता सौंपकर –
एक और बूढ़ा सूरज ढल गया ।

ग्रहण के –
नाग ने कभी उसे डसा ।
दुपहर ने –
कभी बाहुपाश में कसा ।

सभी बाधाओं से बच–बचाकर –
एक और बूढ़ा सूरज ढल गया ।

उदय होगा –
फ़िर सुबह नन्हा सूरज ।
बिखरेगी –
धरा पर किरणों की किरच ।

भोर के ऑचल में धूप डालकर –
एक और बूढ़ा सूरज ढल गया ।